इस्त्राइल में पोलियो वायरस मिला

दुनिया भर से पोलियो के सफाए की मुहिम के सामने एक नई चुनौती पेश हुई है। कुछ माह पूर्व दक्षिणी इस्त्राइल के राहत नामक शहर के मल-जल तंत्र में से पोलियो का वायरस मिला था और धीरे-धीरे खबर आ रही है कि यह देश भर में देखा गया है। इसके चलते इस्त्राइल सरकार ने 9 वर्ष तक के सारे बच्चों के टीकाकरण का एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है।

इस्त्राइल में पोलियो टीकाकरण लगभग 95 प्रतिशत हो चुका था। यहां मृत वायरस से बने टीके (आईपीवी) का इस्तेमाल किया गया था। जबकि भारत जैसे देशों में जीवित मगर दुर्बल वायरस से बने टीके (ओपीवी) का उपयोग हुआ है। इन दोनों टीकों के कार्य करने के तरीके में अंतर होता है। आईपीवी व्यक्ति को प्रतिरोधी बनाता है मगर उसकी आंतों में वायरस पलता रह सकता है। उसके मल में वायरस का उत्सर्जन जारी रहता है। ओपीवी सीधे आंतों में जाता है और वहां के वायरसों का भी सफाया करता है।

चूंकि इस्त्राइल में आईपीवी का उपयोग किया गया था इसलिए वहां आज भी कई लोग इस वायरस के वाहक बने हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोलियो कार्यक्रम के सहायक निदेशक के मुताबिक इस्त्राइल के मल-जल तंत्र में व्यापक रूप से पोलियो वायरस का पाया जाना एक चेतावनी की तरह है। उनका कहना है कि हालांकि अभी यह वायरस सिर्फ मल-जल में पाया गया है मगर इसका मतलब यह है कि कुछ व्यक्तियों के शरीर में यह मौजूद है क्योंकि मल-जल में यह बहुत लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता।

यह सही है कि जिन लोगों में यह वायरस मौजूद है वे इसके प्रतिरोधी हैं और इसकी मौजूदगी में उनमें बीमारी या अपंगता के लक्षण नज़र नहीं आए हैं मगर वातावरण में इसका बने रहना ठीक नहीं है।

अब इस्त्राइल ओपीवी का सहारा ले रहा है ताकि लोगों को वायरस से मुक्त किया जा सके और वातावरण में इसके पहुंचने पर रोक लग सके। आम तौर पर ओपीवी का उपयोग उन देशों में किया जाता है जहां स्वच्छता व शौच व्यवस्था समुचित स्तर की नहीं होती। मगर जैसे ही इस व्यवस्था में सुधार होता है आईपीवी कहीं ज़्यादा कारगर साबित होता है। ***(स्त्रोत फीचर्स)***